है और इसलिए इस बात को अगर हम अनुभव करते हैं जिन्होंने राष्ट्रवाद की कल्पना को समाप्त करने की कोशिश की वह सब विफल रहे और किसी प्रकार से भी सफलता नहीं मिली क्योंकि वह अस्वाभाविक है। इसको भी समझने की आवश्यकता है। जैसा मैंने ये पहले कहा कि 1947 में राष्ट्र निर्माण की बात भारत में कही गई। ये राष्ट्र निर्माण का विचार भी कैसे आया? मैं किसी भी महान व्यक्तियों के लिए अपमानजनक शब्द का प्रयोग मेरे मन के अन्दर भी नहीं, मेरे अन्त:करण में भी नहीं और किसी के भी मन में नहीं होना चाहिए। इस देश के अन्दर राष्ट्रपति कैसे हो सकता है? राष्ट्राध्यक्ष हो सकते हैं। महात्मा गांधी जी का जीवन एक श्रेष्ठतम जीवन रहा है। उनके जीवन के आदर्शों पर समाज चले इसकी अपेक्षा है। ठीक है, कहीं विचारों में भिन्नता हो सकती है। परन्तु क्या भारत माता का ऐसा सुपुत्र कभी राष्ट्रपिता हो सकता हैं? महात्मा गांधी जी के प्रति पूर्ण श्रद्धा अन्त:करण में रखते हुए, इस कल्पना को कैसे जन्म दिया गया, यह सोचने का विषय है क्योंकि कल्पना यह चली कि अभी तक यह राष्ट्र नहीं था। हम राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में लगे हैं और राष्ट्र निर्माण में जिनका योगदान रहा उनको हमने राष्ट्रपिता कहा और इसको संचालित करने वाले को हमने राष्ट्रपति कहा। भाव शायद अप्रमाणिकता का नहीं होगा परन्तु दिशा एक थी। क्योंकि अपने देश का उस समय का नेतृत्व करने वाला वर्ग पश्चिम की विचारों से प्रभावित था और पश्चिमी विचारों से जो प्रभावित होता है तो सारी कल्पनाएं भारत की मूल कल्पना से हटकर और बाहर की कल्पनाओं को स्वीकारने वाला बनता है। राष्ट्रवाद की कल्पना उनके मन में जो पश्चिमी जगत ने रखी, वही उनके दिमाग में भी बैठी और इसलिए राजनैतिक राष्ट्रवाद को स्वीकार कर, मजहब के आधार पर पाकिस्तान की मांग को न वे रोक सके, न नकार सके क्योंकि राष्ट्र की कल्पना अलग है, क्योंकि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की कल्पना अलग है और राजनैतिक राष्ट्रवाद की अलग। इसलिए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद मन के अन्दर गहराई से बैठा रहता तो तत्कालीन नेतृत्व कभी भी इस देश के विभाजन को स्वीकार नहीं करता। परन्तु अपना दुर्भाग्य रहा कि उस समय के अपने नेतृत्व ने इसको गलत ढंग से लिया और भारत सांस्कृतिक दृष्टि से एक है, इस बात को भी छोड़ने की बात हमारे नेतृत्व ने की।

इसलिए भाषाओं के आधार पर प्रान्तों की रचना यह एक राजनैतिक राष्ट्रवाद